RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भारत में कृषि अवधारण के विभिन्न स्वरूप

डॉ. चंचल शर्मा

सहायक आचार्य, लोक प्रशासन विभाग, सेन्ट विलफ्रेड पी.जी. कॉलेज, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान (भारत)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20February 2019

Keywords
भारतीय कृषि , ऐतिहासिक प्रवृत्ति , कृषि के विभिन्न स्वरूप विकास कार्यक्रमों को प्राथमिकता , सामान्य व विषिष्ट कृषि।

ABSTRACT

प्राचीनकाल से ही भारत कृषि प्रधान देष रहा है इसका कारण भारतीय प्रायद्वीप में गंगा व सिन्धुघाटी तथा मालवा क्षेंत्र अपने प्राकृतिक स्वरूप में कृषि योग्य थी। भारत की लगभग 90 प्रतिषत जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है।स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अनेक योजनाओं कृषि सम्बन्धी कार्यों पर विषेष ध्यान दिया गया लेकिन अभी भी भारतीय कृषि की उत्पादकता का स्वर बहुत नीचा है तथा अधिकांष किसानों की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय है।

कृषि उत्पादन, उत्पादक तथा कृषि आदान प्रदान का बहुत प्रभाव पड़ता है। नव आधुनिक युग में नई खोजों के परिणामस्वरूप कृषि उपजों के संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी गयी है।

प्रस्तावना–

प्राचीनकाल से ही भारत कृषि प्रधान देष रहा है इसका कारण भारतीय प्रायद्वीप में गंगा व सिंधुघाटी तथा मालवा क्षेंत्र अपने प्राकृतिक स्वरूप में कृषि योग्य थी। बलुचिस्तान मकरान व सिंधु भाग जो आज उजाड है कभी उपजाऊ थी। आज से लगभग एक लाख वर्ष पूर्ण सर्वप्रथम खाद्यान्न पौधों , बीजों एवं तत्पष्चात् कृषि यंत्रों का अविष्कार हुआ और लगभग दस हजार वर्ष पूर्व आदिम प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में प्राकृतिक बाधाओं के कारण इसका विकास क्रम बहुत ही धीमी गाति से हुआ। पुरा पाषण काल में मानव षिकार एवं फल संग्रहण करना सिखा। इस काल में मानव अपना अंधिकांष समय जीविकोपार्जन हेतु खाद्य सामाग्रीयो की खोज में लगाया था। इस समस्या के समाधान हेतू आदिम मानव कुछ पौधों के बीजों व पषुओं का चयन किया।

जब मानव ने नवपाषाण युग में प्रवेष किया तब से कृषि करना भी आरम्भ किया और जिसका विकासक्रम विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरा है। कृषि के विकास अनुक्रम में आखेट, फल एकीकरण एवं मछली पकड़ना से लेकर स्थानान्तरणषील कृषि अर्द्धस्थायी कृषि , प्रारम्भिक स्थायी , कृषि सघन स्थायी जीवन निर्वाहक कृषि व्यापारिक कृषि व्यवस्था तथा आज की बाजारोंन्मुख कृषि व्यवस्था तक के लम्बें विकास की जानकारी इतिहास के माध्यम से की जा सकती है। कृषि का एक ऐतिहासिक क्रम प्रौगोतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की इस लम्बी अवधि में कृषि पौध बीजों के क्षेंत्रीय एवं कालिक प्रसरण से जुड़ा हुआ है।

पूर्व ऐतिहासिक काल व पूर्ण मध्यकाल में पौधो–फसलों , पषुओं की संख्या बहुत ही कम थी, विषिष्ट प्रकार के पौधे अपने क्षेंत्र में कृषि क्षेंत्रों का विस्तार एवं पौध उपजों एवं पषुओं का प्रसरण सामुदायिक यात्राओं के फलस्वरूप हुआ।

नव आधुनिक युग में नई खोजों के परिणामस्वरूप कृषि उपजों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। कृषि के एतिहासिक स्वरूप में सर्वाधिक विकास 1950 के पष्चात् ही हुआ। राष्ट्रीय आय में 35 से 40 प्रतिषत भाग कृषि से प्राप्त होता है। देष की 50–50 प्रतिषत जनसंख्या के रोजगार तथा जीवनयापन का आधार कृषि है। केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा कृषि विभाग में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कृषि विकास के लिए अनेक कार्यक्रम योजनाओं द्वारा आर्थिक सहायता देने का प्रयत्न किया गया है।

वर्तमान समय में कृषि विकास हेतू 11वीं पंचवर्षीय योजना कियान्वित है देष की 70 प्रतिषत कृषि पर निर्भर है अतः देष की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतू केन्द्र व राज्य सरकार अनेक कार्यक्रम चला रही है जिसमें कृषि विकास महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

कृषि की अवधारण उसके विभिन्न स्वरूप –

कृषि की नयी अवधारण है जिसके विभिन्न निहितार्थ है वस्तुत ग्रामीण क्षेंत्रों में कृषि विकास कार्यक्रगों , बागवानी, पषुपालन, भू–संरक्षण की तकनीक भी षामिल है। इस पद्धति से यह उपेक्षा की गई कि कृषि तकनीक को स्थानीय पारिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन कर स्थानीय क्षमता का दोहन किया जायें।

भारत का प्रमुख व्यवसाय प्राचीनकाल से ही कृषि रहा है। भारत प्रायद्वीप में गंगा सिन्धु घाटी व मालवा क्षेंत्र अपने प्राकृतिक स्वरूप में कृषि योग्य थी।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

राज्य में काष्तकारों द्वारा आदिकाल से अपनायी जा रही तकनीक को सुधारने हेतू निम्न प्रयास किये गये थें। कृषि की देख–रेख करने हेतू कर्मचारी केवल जोधपुर, जयपुर व बीकानेर अन्य सामग्री तथा सुधरे हुये बीज एवं खाद व नई तकनीक उपलब्ध नहीं थी। कृषि विभाग को भी सभी कुछ नये सिरे से प्रारम्भ करना पड़ा था।

रियासतों के विलय के फलस्वरूप 1949 कृषि विभाग का प्रारम्भ किया गया। 1952 में कृषि विभाग का गठन किया गया राज्य के मुख्यालय पर कृषि विभाग के कार्यपालन के लिए व्यापक निंयत्रण और पर्यवेक्षण हेतू आयुक्त कृषि की व्यवस्था की गई है। अब कृषि और सहकारिता विभाग को 73वें सांविधानिक संषोधन द्वारा संविधान में 7वें खण्ड सूची में जोड़ा गया है। इस अनुसूची में 24 खण्ड़ों में कृषि व सहकारिता विभाग को सुगठित किया गया है। जिसमें एक तकनीकी मिषन तिलहन व दालों को सम्मिलित किया गया है। इनमें मुख्य विषय जोडें गये है खाद्य और कृषि संगठन , कृषि विकास सम्बन्धित निर्णयों की क्रियान्विति , पौधा रोपण में प्रगति ,कृषि उत्पादन की गणना, प्राकृतिक आपदाएं , सूखा ग्रस्त क्षेंत्र के किसानों को उचित सहयोग देना, सूखा के कारण माननीय क्षति हो जाना, भारतीय नागरिकों के लिए प्राकृतिक आपदा से सम्बन्धित दृस्त बनाना इत्यादि। ग्याहरवीं अनुसूची को प्रतिष्टी –1 में कृषि जिसके अन्तर्गत कृषि विस्तार भी है सम्मिलित है।

भारत में कृषि व ग्रामीण विकास में परम्परा तारतम्यता के कारण कृषि विकास महत्वपूर्ण बन गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व के कारण ग्रामीण विकास एवं कृषि में स्थायी अन्तरसम्बन्ध स्थापित हुआ है।

कृषि षब्द की उत्पति संस्कृत की कृष धातु से हुई है। इसका तात्पर्य 'जोतना ' या 'खीचना'। इसके अंग्रेजी पर्याय '।हतपबनसजनतम' षब्द की रचना लेटिन भाषा ने दो षब्दों ।हतम अर्थात् सीक या पिमसक तथा बनसजनतम अर्थात् जीम बंतम व ा बनसजप अंजपवद से हुई है जिसका अर्थ हुआ भूमि को जोतकर फसलें पैदा करना।

इस प्रकार कृषि का अर्थ व्यापक है इसके अन्तर्गत मानव की उन समस्त कियाओं को सम्मिलित किया गया है जिनकी सहायता से खाद्य और कच्चे माल की प्राप्ति के लिए मिटटी का उपयोग होता है। इसके अन्तर्गत भूमि की जुताई से लेकर कृत्रिम साधनों से सिंचाई उर्वरकों की आपूर्ति , मिट्टी संरक्षण , हानिकारक तत्वों से पौधों की रक्षा करना आदि अनेक विस्तृत कार्यक्रमों को अपनाया जाता है।

(1) उत्पादों से प्राप्त आय के अनुपात के आधार पर –

(अ) विषिष्ट कृषि –

उत्पादों से प्राप्त कुल आय का 50 प्रतिषत या अधिक भाग एक ही उद्यम या फसल से प्राप्त होता है तो ऐसे फार्म को उस उद्यम या फसल के उत्पादन का विषिष्ट फार्म तथा इस प्रकार की कृषि को विषिष्ट कृषि कहते है। देष के कुछ राज्यों में चाय, कॉफी , पटसन , तम्बाकू, कपास , गन्ना , सब्जियों के विषिष्ट फार्म है।

(ब) सामान्य कृषि –

सामान्य कृषि के अन्तर्गत कृषक फार्म पर वर्ष में अनेक उत्पाद उत्पन्न करते है। इस प्रकार की कृषि के अन्तर्गत कृषक फार्म से प्राप्त आय का 50 प्रतिषत भाग किसी भी एक फसल के उत्पादन से प्राप्त नहीं होता है। ऐसे फार्म पर खाद्यन्न , सब्जी , पषुपालन , कुकुट पालन आदि सभी उद्यम लिए जाते है।

(स) मिश्रित कृषि–

मिश्रित कृषि से तात्पर्य फार्म पर कृषि उत्पादन के साथ–साथ पषुपालन उद्यम या दूध उत्पादन व्यवसाय को लेने से है।

(2) उत्पादन की प्रकृति के आधार पर–

(अ) खाद्यान्नों की कृषि –

वे फार्म जिन पर मुख्यालय खाद्यान्ना वाली फसलों जैसे जौ, चावल, बाजरा,ज्वार , मकका आदि किये जाते है, खाद्यान्नों को कार्य कहलाते है।

(ब) सब्जी की कृषि –

वे फार्म जिन पर मुख्यालय सब्जी बोयी जाती है सब्जी से फार्म कहलाते है।

(स) फलो के बाग –

वे फार्म जिन पर आम , पपीता ,सेब, अमरूद, सन्तरे आदि के बाग लगाए जाते है।

(द)दूध उत्पादन के फार्म –

वे फार्म जिन पर दूध उत्पादन के लिए गाय या भैंस पाली जाती है डेयरी फार्म कहलाते है।

(3) उत्पादन साधनों के उपयोग के अनुपात के आधार पर

(अ) विस्तृत कृषि/भूमि प्रधान कृषि –

जब फार्म पर कृषि उत्पादन के लिए भूमि साधन का श्रम व पूंजी की अपेक्षा अधिक मात्रा में उपयोग किया जाता है तो उन फार्म को विस्तृत ' कृषि कार्य' एवं कृषि को 'विस्तृत कृषि ' कहते है। जनसंख्या के कम घनत्व वाले क्षेंत्रों में साधारणतया विस्तृत कृषि अपनाई जाती है। क्योंकि इन क्षेंत्रों में भूमि आसानी से व कम लगान राषि पर उपलब्ध हो जाती है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

(ब)सघन कृषि–

जब फार्म कृषि उत्पादन के लिए श्रम तथा पूंजी उत्पादन साधनों का भूमि की उपेक्षा अधिक मात्रा में उपयोग किया जाता है तो उस कृषि को सघन कृषि कहते है।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के पष्चात् कृषि क्षेंत्र में उत्पादन वृद्धि करने के लिए सघन कृषि अपनाई गयी ळें

(4) सिंचाई की सुविधा के आधार पर–

(अ)सिंचित कृषि –

जिन क्षेंत्रों में सिचाई की पर्याप्त सुविधाऐं होती है। उन क्षेंत्रों में वे फसले उत्पादित की जाती है जिन्हें पानी की अधिक मात्रा में निरन्तर आवष्यकता होती है ऐसी कृषि को सिंचित कृषि कहते है।

(ब) षुष्क कृषि–

षुष्क व अर्द्धषुष्क क्षेंत्रों में जहाँ वार्षिक औसत वर्षा 70 इंच 50 सेमी से कम होती है तथा सिंचाई की पर्याप्त सुविधा नहीं होती है ऐसे क्षेंत्रों में की जाने वाली कृषि को षुष्क कृषि कहते है। देष में कुल खाद्यान्न उत्पादन का 42 प्रतिषत भाग षुष्क क्षेंत्रों से प्राप्त होता है।

(5) यांत्रिक सांधनों के उपयोग के आधार पर

(अ) प्रचलित कृषि –

इसके अन्तर्गत फार्म पर कृषि कार्यों को करने के लिए देषी औजार व हल प्रयुक्त किये जाते है।देषी औजारों से खेती करने पर लागत अधिक आती है। कार्य करने में समय अधिक लगता है और जुताई भी उचित गहराई तक नहीं हो पाती है।

(ब) यांत्रिक कृषि –

यांत्रिक कृषि से तात्पर्य उस कृषि के प्रकार से है जिसके अन्तर्गत फार्म पर किये जाने वाले सभी या आंषिक कृषि कार्य पषु एवं मानव श्रम के स्थान पर यंत्रों की सहायता से किये जाते है। यांत्रिक कृषि में श्रम की अपेक्षा पूंजी का अधिक उपयोग होता है।

(6) भूमि के क्षेंत्रफल के आधार पर –

(अ) छोटें पैमाने पर कृषि –

इसमें फार्म का आकार कम होता है जिससे कृषि कार्यों के करने में यांत्रिक साधनों का उपयोग कर पाना सम्भव नहीं होता है।

(ब) बडें पैमाने पर कृषि –

इसमें फार्म का आकार अधिक होता है। फार्म पर कार्यों को करने के लिए ट्रैक्टर एवं बड़े यंत्र काम में लिए जाते है।

(7)व्यवसायिक उद्यमों के आधार पर –

(अ) पारिवारिक कृषि –

वे फार्म जो परिवार के सदस्यों की सहायता से कृषित किए जाते है तथा उनसे प्राप्त आय परिवार के जीवन यापन के लिए पर्याप्त होती है।

(ब) व्यापारिक कृषि –

वे फार्म जो पूंजीपतियों एवं अन्य समृद्धषील व्यक्तियों द्वारा कृषित किए जाते है। इन पर कृषि की उत्रत विधियाँ तथा कृषि यंत्र उपयोग में किए जाते है।

राज्य सरकार के अनुसार कृषि विभाग के नवीनतम रूपमें 1952 में कृषि की परिभाषा हेतू निम्न आधार निष्चित किए गए –

(अ) कृषि अर्थषास्त्र में कृषकों को धन से सम्बन्धित सामाजिक एवं अन्य क्रियाओं के अध्ययन का समावेष होता है।

(ब) कृषकों की उत्पादन उपभोग , विनिमय, वितरण एवं सार्वजनिक वित सम्बधी सभी क्रियाओं का अध्ययन सम्मिलित होता है।

(स) कृषि का मुख्य उददेष्य कृषको को सीमित उत्पादन साधनों द्वारा अधिकतम सन्तोष प्राप्ति कराना है।

भारत में 90 प्रतिषत जनता कृषि पर निर्भर है। देष में विस्तृत कृषि पद्धति है ग्रामवासी अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति हेतू कृषि पर निर्भर रहते है। कृषि के रूपों का वर्गीकरण अनेक आधारों पर किया गया है। अलग–अलग भूमि व अलग–अलग साधनों के अनुसार ही हमारे देष में कृषि की जाती है। कृषि प्रमुख आधार सीमित उत्पादन साधनों में अधिकतम आपूर्ति है।

संदर्भ सूची

(1) डॉ.गोपीनाथ षर्मा (20040)'राजस्थान का इतिहास षिवलाल अग्रवाल कम्पनी पृ.सं. 3
(2) षर्मा बी.एस.(1988) कृषि भूगोल साहित्य भवन आगरा पृ.सं. 296
(3) सहाय षिवस्वरूप (2004) ''प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास '' मोतीला बनारसीदास बगालों रोड़ दिल्ली पृ.सं. 323
(4) भारती आर.के.(2002) ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' प्रकाषन मध्यप्रदेष हिन्दी अकादमी भोपाल पृ.सं. 259
(5) डॉ. माथुर बी.एल (2001) ''कृषि अर्थव्यवस्था'' अरिहन्त प्रकाषन पृ.सं. 1

RRIJM 2015, All Rights Reserved